

# डॉ. नट हेम, नीतिवचन, व्याख्यान 12

## समृद्धि नरसंहार

© 2024 नॉट हेम और टेड हिल्डेब्रांट

यह नीतिवचन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. नट हेम हैं। यह सत्र संख्या 12 है, समृद्धि संस्करण और नरसंहार पर कविता।

नीतिवचन की बाइबिल पुस्तक पर व्याख्यान 12 में आपका स्वागत है।

इस व्याख्यान में मैं दो विशेष विषयों पर ध्यान केन्द्रित करना चाहता हूँ। एक समृद्धि से संबंधित नीतिवचनों की दो भिन्न पुनरावृत्तियों में एक विडंबनापूर्ण जुड़ाव है। इस व्याख्यान का दूसरा विषय नरसंहार पर कविता है।

इसलिए, सबसे पहले, मैं दो श्लोकों से शुरू करता हूँ, नीतिवचन 10.15 और नीतिवचन 18.11। ये बिल्कुल समान कथन हैं, लेकिन जैसा कि हम देखेंगे, अपने सूक्ष्म अंतरों में, वे अपने पाठकों और श्रोताओं को संबंधित और विभिन्न प्रकार के व्यावहारिक सुझाव देते हैं। नीतिवचन 10:15 में लिखा है, धनवान का धन उसका दृढ़ नगर है। गरीबों की बर्बादी उनकी गरीबी है।

नीतिवचन 18:11 में लिखा है, धनवान का धन उसका दृढ़ नगर है, और उसकी कल्पना में सुरक्षित दीवार के समान है। नीतिवचन 10.15 में वह शामिल है जिसे पारंपरिक रूप से प्रतिपक्षी समानता कहा जाता है, जबकि नीतिवचन 18.11 पारंपरिक रूप से पर्यायवाची समानता का एक उदाहरण है। श्लोक 10.15 में दो आधे छंदों को चिस्टिक क्रम में व्यवस्थित किया गया है, इसलिए दृश्य की सुविधा के लिए शब्द अनुक्रम को उलट दिया गया है।

प्रत्येक शब्द का एक समान विपरीत होता है, एकमात्र अंतर यह है कि प्रत्यय भाषण के एक अलग हिस्से में स्थानांतरित हो गया है। संगत शब्दों के तीन सेट सभी विपरीत हैं, उनकी गरीबी के विपरीत धन, गरीब बहुवचन के विपरीत अमीर एकवचन, उनकी बर्बादी के विपरीत उनका मजबूत शहर। संबंधित तत्व बिल्कुल सीधे विपरीत हैं, और दो आधे छंदों में विरोधाभासी बयान पारंपरिक और शायद घिसे-पिटे भी लगते हैं, जो कि एक पुरस्कार-संचालित आर्थिक माहौल में उम्मीद की जा सकती है।

हालाँकि, हम देखेंगे कि नीतिवचन 18:11 में, समानांतर तत्व और सामग्री दोनों असामान्य हैं। नीतिवचन 18:11 में, नीतिवचन 18:11 के अंत में उनकी कल्पना का अंतिम वाक्यांश इस मान्यता में देरी करके आश्चर्य पैदा करता है कि 18:11 में स्पष्ट रूप से पारंपरिक कथन, जो नीतिवचन 10:15 के समान लगते हैं, वास्तव में अत्यधिक हैं विडम्बना. विपरीत वस्तुएं धन हैं और फिर अप्रत्यक्ष रूप से दीर्घवृत्त के माध्यम से भी धन, फिर अगला विरोध, या पत्राचार बल्कि, अमीर और अमीर आदमी की कल्पना है, और फिर उसका दृढ़ शहर और एक सुरक्षित दीवार की तरह।

इस कविता में समानता इसके भिन्न समकक्ष से उल्लेखनीय रूप से भिन्न है। नीतिवचन 18.11ए में नाममात्र वाक्य का विषय, अमीरों की संपत्ति, अभी भी अनुमानित है, और दूसरी छमाही कविता एक दूसरी विधेय, सुरक्षित दीवार प्रदान करती है, लेकिन काफी विस्तारित रूप में। अमीर आदमी की संपत्ति का प्रतीकात्मक समीकरण यह है कि उसका किलेबंद शहर अब उपमा में बदल गया है।

यह एक सुरक्षित दीवार की तरह है, जिसका विस्तार अकेले कई व्यंजनों से होता है। हालाँकि, इस कहावत की वास्तविक शक्ति, इस कहावत के बिल्कुल अंत में, दूसरी छमाही पंक्ति के अंत में शब्द की स्थिति से उत्पन्न होती है। जबकि पाठक या श्रोता पंक्ति के पहले भाग में बताए गए उत्साहजनक सत्य की सरल पुनर्चना की अपेक्षा करते हैं, उनकी प्रत्याशा की पुष्टि दूसरी छमाही पंक्ति के शुरुआती शब्दों से होती है।

लेकिन यह भ्रम उस विनाशकारी पंच शब्द से टूट गया है जो आश्चर्यजनक रूप से पहले आधे श्लोक का अर्थ बदल देता है और नीतिवचन 10:15 में पहले के संस्करण के बिल्कुल विपरीत खड़ा हो जाता है। नीतिवचन की प्रभावशीलता धन के सार्वभौमिक लाभ के बारे में अपेक्षाओं के उलट होने पर निर्भर करती है जैसा कि नीतिवचन 10:15 में स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया है। तब ऐसा प्रतीत होता है कि नीतिवचन 10:15 शायद दोनों का पहला संस्करण था और जहां तक नीतिवचन के संदेश का संबंध है, नीतिवचन 18:11 एक अत्यधिक मूल बिंदु बनाने के लिए जानबूझकर नया रूप दिया गया संस्करण है। हालाँकि, अब मैं नीतिवचन 10:15 और नीतिवचन 18.11 दोनों के संदर्भों की ओर मुड़ता हूँ। एडल बर्लिन ने कहा कि दो वेरिएंट की प्रासंगिक उपयुक्तता प्रत्येक में नियोजित इमेजरी के प्रकार पर भी निर्भर करती है। उन्होंने तीन जोड़ी काव्य पंक्तियों पर विचार किया जिनमें पहली छमाही में समान या लगभग समान पंक्तियाँ शामिल हैं।

वह कहती हैं कि दूसरी छमाही की पंक्तियाँ शब्दार्थ की दृष्टि से समतुल्य हैं लेकिन अलग-अलग शब्दों में व्यक्त की गई हैं। यानी, उद्धरण, दो पूरी तरह से अलग समानताएं जिनमें एक पंक्ति समान है, अंत उद्धरण। वह यहां भजन 39.13, भजन 102 पद 2, भजन 55 पद 2, और भजन 86 पद 6 के बीच कई समानताओं का उल्लेख करती है, और फिर अंत में यहां नीतिवचन 18:11 के समानांतर हमारा उदाहरण नीतिवचन 10:15 है। इसने उन्हें यह निष्कर्ष निकालने, उद्धृत करने के लिए प्रेरित किया कि इनमें से प्रत्येक छंद में अर्थ संबंधी समानताएं न केवल समान रूप से स्वीकार्य हैं, न ही दूसरे की तुलना में अधिक समानांतर हैं, बल्कि यह कि प्रत्येक मामले में समानांतर का विकल्प उस बड़े संदर्भ में फिट बैठता है जिसमें कविता स्थित है, अंत उद्धरण।

हमारे विभिन्न प्रकार के सेट के संबंध में, उन्होंने कहा, नीतिवचन 10 में धर्मी और दुष्ट, बुद्धिमान और मूर्ख के बीच कई अन्य विरोधाभास हैं और इसलिए अमीर और गरीब के बीच का अंतर बिल्कुल घरेलू है। दूसरी ओर, नीतिवचन 18 की संरचना बहुत अलग है। यह त्वरित विरोधाभासों पर नहीं बल्कि अधिक लंबी छवियों पर बनाया गया है और श्लोक 11 इनमें से एक में फिट बैठता है, अंत उद्धरण।

हालाँकि, दोनों वेरिअंट का प्रासंगिक फिट बर्लिन की मान्यता से भी आगे जाता है। नीतिवचन 10:15 नीतिवचन 10:12 से 18 तक फैले एक लौकिक समूह का हिस्सा है। श्लोक 16 से इसका संबंध विशेष रूप से घनिष्ठ है, इतना अधिक कि नीतिवचन 10:15ए में प्रत्येक तत्व की नीतिवचन 10:16ए में एक समान अभिव्यक्ति है और प्रत्येक तत्व नीतिवचन 10:15बी में नीतिवचन 10:16बी में समानता है। जब दोनों छंदों पर एक साथ विचार किया जाता है, तो नीतिवचन 10 :15ए में धन को अपने आप में सकारात्मक नहीं बल्कि धार्मिक जीवन के लिए अच्छी तरह से अर्जित पुरस्कार के रूप में माना जाता है।

दूसरे भाग के छंद में व्युत्क्रम व्यक्त होता है। जोड़ियों के बीच परस्पर क्रिया से पता चलता है कि नीतिवचन 10:15बी में गरीबों की बर्बादी का कारण गरीबी नहीं है। बल्कि, नीतिवचन 10:16बी से पता चलता है कि दुष्ट लोगों की उपलब्धियाँ पाप की ओर ले जाती हैं और 10:15बी में उल्लिखित गरीबी को पाप की मजदूरी के रूप में देखा जाता है।

इसी अर्थ में इसे विनाशकारी कहा गया है। इस प्रकार, नीतिवचन 10:16 एक कथन की व्याख्या को आकार देता है जो आत्म-संरक्षण के अभियान में आर्थिक सफलता के लिए प्रेरणा प्रदान करता प्रतीत होता है और बाद में स्पष्ट करता है कि सच्ची सुरक्षा धन में नहीं बल्कि धार्मिक जीवन के लिए पुरस्कार में निहित है, जिसके अनुसार इन दोनों कहावतों में स्थायी और सच्ची समृद्धि शामिल है। नीतिवचन 10:15 और 10:16 फिर एक लौकिक जोड़ी बनाते हैं।

दूसरी कहावत पहली कहावत की कहानी को एक चुभन प्रदान करती है और साथ में वे आर्थिक नैतिकता के एक परिष्कृत दृष्टिकोण में संयोजित होती हैं, जो आश्चर्यजनक तरीके से, नीतिवचन 10:15 के स्पष्ट रूप से सरल विचार को उल्टा कर देती है। नीतिवचन 18:11 स्पष्ट रूप से एक काव्य पंक्ति के भीतर वही करता है जो निश्चित रूप से कोई संयोग नहीं है। विशेष भिन्नताओं और प्रासंगिक व्यवस्थाओं के माध्यम से, दोनों प्रकारों में अपेक्षाओं के समान उलटफेर को प्रेरित किया जाता है।

नीतिवचन 18:11 भी एक लौकिक समूह से संबंधित है, नीतिवचन 18:10-15, और यह आसन्न कहावत के साथ एक लौकिक युग्म भी बनाता है। श्लोक 10 और 11 की सामग्री समान है। दोनों कहावतों में, दो संस्थाएं जो सुरक्षा का वादा करती हैं, एक में भगवान का नाम और दूसरे में धन, क्रमशः एक मजबूत टॉवर और एक मजबूत शहर और ऊंची दीवार के रूप में उल्लेखित और पहचाने जाते हैं।

दूसरे भाग के छंद प्रारंभिक कथनों को योग्य बनाते हैं। प्रभु का नाम वास्तव में सुरक्षित गढ़ के रूप में पुष्टि किया गया है। इसके विपरीत, धन, सुरक्षा का एक संदिग्ध स्रोत है।

प्रभु के बिना, यह केवल एक अमीर व्यक्ति की कल्पना की उपज है। निम्नलिखित श्लोक, श्लोक 12, बात को पुष्ट करता है। श्लोक 10 के निहितार्थ के अनुसार, अपने स्वयं के संसाधनों पर अनुचित विश्वास, जो श्लोक 11 की संपत्ति है, प्रभु में विश्वास की कीमत पर, घमंड के रूप में वर्णित है जो अंततः विनाश की ओर ले जाता है।

जब हम नीतिवचन 18.11 में समानताओं को फिर से अधिक विस्तृत तरीके से देखते हैं, तो हम देखते हैं कि एक एकल अभिव्यक्ति संबंधित तत्वों के अन्यथा साफ-सुथरे सेटों से अलग दिखती है। जिस वाक्यांश का हमने पहले उल्लेख किया है, उसकी कल्पना में। कई निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं।

सबसे पहले, प्रभु का नाम जिसमें नीतिवचन 10 के धर्मी लोग शरण लेते हैं, वह सच्चा धन है जिसकी सभी को आकांक्षा करनी चाहिए। दूसरे, धार्मिक और अमीर शब्द एक दूसरे के विरोधी नहीं हैं। विरोधाभास भगवान पर विश्वास की कीमत पर धनी व्यक्ति की आत्मनिर्भरता से उत्पन्न होता है।

तीसरा, लौकिक जोड़ी में वास्तुशिल्प संरचनाओं का क्रम शहर के गढ़, मजबूत टॉवर, प्राचीन शहरों में शरण का सबसे सुरक्षित स्थान, पूरे किलेबंद शहर से लेकर बाहरी सुरक्षा के रूप में दीवार तक एक केन्द्रापसारक स्थानिक गतिशीलता प्रदर्शित करता है। वह प्रणाली जिसे किसी सफल हमले की स्थिति में सबसे पहले अपनाया जाएगा। चौथा, उनकी कल्पना में या उनकी फंतासी में अभिव्यक्ति का छंद 10 से 11 की लौकिक जोड़ी में कोई समानांतर तत्व नहीं है, हालांकि यह वह तत्व है जो पंच शब्द का गठन करता है जो पूरी इकाई का अर्थ निर्धारित करता है। मैंने पहले ही संक्षेप में बताया है कि श्लोक 12, जो घमंड के विनाशकारी परिणामों की चेतावनी देता है और विनम्रता को बढ़ावा देता है, नीतिवचन 18.10 से 11 में बताए गए बिंदुओं को पुष्ट करता है।

अभिव्यक्ति जो 18.12ए में गर्व को दर्शाती है, विनाश से पहले एक आदमी का दिल ऊंचा होता है, क्रियाओं के बीच एक दिलचस्प शब्द-खेल का परिचय देता है सुरक्षित होना, शाब्दिक रूप से ऊंचा होना, और गर्व होना शब्द, वस्तुतः ऊंचा होना भी। अमीर आदमी की आत्मनिर्भरता भगवान में विश्वास की कीमत पर घमंड, अपने संसाधनों पर अनुचित विश्वास के रूप में उजागर होती है। नीतिवचन 18.12ए इस प्रकार की आत्मनिर्भरता को भ्रमपूर्ण के रूप में उजागर करता है, यही बात नीतिवचन 18.11 के अंत में उसकी कल्पना में पंच शब्द द्वारा बताई गई है। इस प्रकार, संस्करण 18 से 11 में सबसे विशिष्ट भिन्नता, उनकी कल्पना में शब्द, एक महत्वपूर्ण लिंगिंग उपकरण बन जाता है जो आसन्न कहावतों के साथ संस्करण को जटिल रूप से जोड़ता है, इस प्रकार उन्हें नीतिवचन 10 से 12 तक एक लौकिक त्रिक में बदल देता है।

यह ऊपर दिए गए विश्लेषण की तुलना करने लायक है जो मैंने यहां दो प्रकारों के अर्थ और वे एक दूसरे के साथ कैसे बातचीत करते हैं, इस पर मर्फी के विचारों के साथ दिया है। मर्फी के विचार में, नीतिवचन 10.15 में कोई छिपा हुआ संदेश नहीं है। यहां नैतिक पाठ संप्रेषित करने का कोई इरादा नहीं है। यह बस वास्तविकता पर एक प्रतिबिंब है।

चीजें ऐसी ही हैं। हालांकि, 10.15 की तुलना 18.11 से करते हुए, जिसकी व्याख्या उन्होंने इसके साथी श्लोक 18.10 की पृष्ठभूमि के विरुद्ध की, उन्होंने निष्कर्ष निकाला, उद्धरण, जैसा कि कई अन्य कहावतों के मामले में है, किसी को उन्हें एक-दूसरे के विरुद्ध संतुलित करना सीखना चाहिए। यहां उन्होंने एक कनेक्शन नोट किया।

नीतिवचन 10.15 के प्रकाश में नीतिवचन 18.11 के महत्व की उनकी विस्तारित चर्चा पूरी तरह से उद्धृत करने योग्य है। बस इस थोड़े लंबे उद्धरण के लिए मेरा साथ दीजिए। नीतिवचन की पहली पंक्ति जानबूझकर नीतिवचन 10.15 को उठाती है, जो एक स्पष्ट तथ्य को व्यक्त करती है।

धन एक सुरक्षा है। यहां तक कि 11वीं को कुछ हद तक तटस्थ अर्थ में लिया जा सकता है और लाइन ए के पर्यायवाची समानता के रूप में देखा जा सकता है। तो अमीर आदमी सोचता है। यह कोई अनुचित दृष्टिकोण नहीं होना चाहिए।

यह नीतिवचन 10.15 को प्रतिध्वनित करता है। हालाँकि, इस कहावत का अर्थ अधिक है यदि, जैसा कि वह कल्पना करता है, केवल एक स्पष्ट लेकिन अंततः सुरक्षा के झूठे उच्च बिंदु को इंगित करता है। यह यही करता है। इसका अभिप्राय श्लोक 10 में वर्णित ऊंचे टॉवर या भगवान के नाम से है।

इसलिए, स्थिति पर सावधानीपूर्वक विचार करना होगा। अमीर वास्तव में किस पर या किस पर भरोसा करते हैं? यह आयत नीतिवचन 10:15 के संबंध में एक चेतावनी लगती है। सख्ती से कहें तो अमीरों पर कोई फैसला नहीं सुनाया जाता। इसलिए, यह कहावत नीतिवचन 10.15 का अर्थ नहीं बदलती है, जो कि जहाँ तक सत्य है।

लेकिन समय रहते सावधानी बरती जाती है। श्लोक 11 के धनी को श्लोक 10 को भी ध्यान में रखना चाहिए क्योंकि प्रभु ऐसी शक्ति प्रदान करते हैं जो विफल नहीं हो सकती। अब, ये व्यावहारिक और अत्यधिक प्रासंगिक विचार हैं।

हालाँकि, समानता के संदर्भ के विश्लेषण के प्रकाश में जो मैंने अभी दिया है, हम फिर से एक संपादकीय हाथ को काम करते हुए देख सकते हैं जो प्रासंगिक व्यवस्थाओं के साथ-साथ चलने वाली पुनरावृत्ति के बीच सूक्ष्म बदलावों के माध्यम से छंदों के अर्थ को कुशलता से बदल देता है। परिणाम सूक्ष्म और लाभप्रद दोनों हैं। और मर्फी के विपरीत, मैं कहूंगा कि श्लोक 16 के संदर्भ में नीतिवचन 10.15 उससे कहीं अधिक विध्वंसक है जितना मर्फी ने भी महसूस किया था।

अब मैं अपेक्षाकृत संक्षेप में, हालाँकि यह एक अविश्वसनीय रूप से महत्वपूर्ण विषय क्षेत्र है, तीन छंदों की ओर मुड़ता हूँ जिनके बारे में मेरा मानना है कि ये नरसंहार पर कविता हैं। नीतिवचन 24:12 नीतिवचन 10 से 12 तक के एक छोटे खंड से संबंधित है और इसकी व्याख्या इस प्रकाश में करने की आवश्यकता है। यहाँ संपूर्ण अंश है।

। संकट के समय आप निष्क्रिय रहे , आपकी शक्ति सीमित थी। यदि तुम उन लोगों को बचाने में असफल हो जाते हो जो मौत के घाट उतारे जा रहे हैं, जो लड़खड़ाते हुए कल्लेआम की ओर जा रहे हैं, यदि तुम कहते हो, देखो, हम यह नहीं जानते थे।

क्या यह सच नहीं है? जो दिलों को तोलता है, वही समझता है। और जो तुम्हारे प्राण की रक्षा करता है, वही जानता है। और वह मनुष्य को उसके काम के अनुसार बदला देता है।

अब, श्लोक 12ए में प्रदर्शनवाचक सर्वनाम यह, देखो, हमें यह नहीं पता था, श्लोक 11 में वर्णित संकट को संदर्भित करता है, लोगों को मौत की ओर घसीटा जा रहा है, वध के लिए लड़खड़ाया जा रहा है। अनिर्दिष्ट संख्या में लोगों को वध करने के लिए हिंसक तरीके से घसीटा जाता है और उनके साथ इस हद तक दुर्व्यवहार किया जाता है कि वे लंबे समय से सहन किए जा रहे निरंतर दुर्व्यवहार के कारण थकावट और चोट से झूल रहे हैं। मेरा मानना है कि यह उत्पीड़न, यातना और हत्या के एक निरंतर अभियान का वर्णन है।

श्लोक 12 में प्रश्न चिह्न, असामान्य अभिव्यक्ति को अपवर्तित करते हुए, एक प्रसिद्ध सत्यवाद का परिचय देता है, वह अधिकार जिसके लिए वक्ता अपील करता है। अधिक महंगे गद्य में एक व्याख्या परिच्छेद की व्यावहारिक शक्ति को पकड़ सकती है। तो, आप संकट में शामिल नहीं हुए क्योंकि आप जानते थे कि आप बदलाव लाने के लिए पर्याप्त मजबूत नहीं थे।

यदि आप इसे बहाना बनाते हैं, या यदि आप दिखावा करते हैं कि आपको संकट की पूरी गंभीरता का पता नहीं है, तो प्रसिद्ध कहावत याद रखें, जो दिल को तोलता है, वह समझता है। जो तेरे प्राण की रक्षा करता है, वही जानता है। और सावधान रहो, परमेश्वर सब लोगों को उनके कामों का बदला देता है।

जैसे ईश्वर आपकी देखभाल करता है, वैसे ही वह उनकी भी देखभाल करेगा जिन्हें आपने अस्वीकार कर दिया है। वह सचमुच हर एक को उनके कामों के अनुसार, पीड़ितों को उनकी बेगुनाही के अनुसार और तुम्हें उस अपराध के अनुसार फल देगा जो तुमने ऐसा अन्याय करके किया है। अब, मैं स्वीकार करता हूँ कि जिस तरह से मैंने इस परिच्छेद की व्याख्या की है, वह इसकी व्याख्या करने का एक तरीका है।

यह शायद कुछ ऐसा है जिस पर मैंने पिछले व्याख्यानों में कम जोर दिया है। मैंने लगातार कल्पनाशील व्याख्याएँ प्रस्तुत की हैं, उनमें से कुछ दूसरों की तुलना में अधिक साहसी हैं, उनमें से कुछ शायद दूसरों की तुलना में अधिक विश्वसनीय हैं। इस प्रक्रिया में, मैंने यह आभास दिया होगा कि मेरा मानना है कि मेरी व्याख्याएँ या तो सर्वोत्तम हैं या एकमात्र सही व्याख्याएँ हैं।

अगर मैंने ऐसा किया है, तो मैं यहीं, इसी वक्त आपसे माफी मांगना चाहता हूँ, क्योंकि मुझे लगता है कि कल्पनाशील व्याख्या से मेरा जो मतलब है, उसकी यह गलतफहमी होगी। कविता, वैसे, कई अलग-अलग तरीकों से अपनी संक्षिप्तता, भाषण के साहसी आंकड़ों, रूपकों आदि में कम निर्धारित होती है, ताकि यह हमेशा कई दिलचस्प, अच्छी व्याख्याओं को उजागर और संभव कर सके। मैं व्यक्तिगत रूप से यह मानता हूँ कि मैंने जो व्याख्याएँ प्रस्तुत की हैं उनमें से कई वास्तव में सर्वश्रेष्ठ हैं।

हालाँकि, मैं निश्चित रूप से यह नहीं कहना चाहता, और मुझे नहीं लगता कि केवल वे ही संभव हैं और वे ही एकमात्र सच्ची या सही व्याख्याएँ हैं। और यही बात यहां भी सच है। और यह अच्छी तरह से हो सकता है कि एक जर्मन धर्मशास्त्री के रूप में मेरी पृष्ठभूमि, जिनके दादा-दादी दोनों द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान शामिल थे, ने इस अनुच्छेद को पढ़ने के लिए मुझे आकार दिया है।

लेकिन मेरे लिए, समानताएं हड़ताली हैं। मुझे कई अवसरों पर जर्मन चर्चों में रोमन 13 के प्रसिद्ध अनुच्छेद पर उपदेश देना याद है, जहां पॉल ने रोमनों को लिखे अपने पत्र में ईसाइयों को राजनीतिक अधिकारियों के अधीन रहने के लिए प्रोत्साहित किया था। और मुझे अच्छी तरह से याद है, उस समय के लेखों से और अपने दादा-दादी की पीढ़ी के कई लोगों के साथ की गई चर्चाओं और बातचीत से, कि हिटलर के जर्मनी में, यूरोप में यहूदियों के खिलाफ नरसंहार के दौरान, कई, कई लोग थे ईसाई, जर्मन ईसाई, कौन कह सकता है, वे ये दोनों बहाने बनाते हैं जिनके बारे में हम यहां नीतिवचन 24, 10 से 11 में पढ़ते हैं।

या तो वे कहेंगे, मैं अकेला क्या कर सकता था? इससे कोई फर्क नहीं पड़ता और निहितार्थ यह होता कि मैं स्वयं को खतरे में डाल देता। और दूसरा बहाना जो मैंने अक्सर सुना है वह यह है कि लोगों ने कहा, देखो, हमें पता नहीं था। मेरा शायद वास्तव में कभी मतलब नहीं था, मुझे नहीं लगता कि उनका वास्तव में मतलब था, हम कुछ भी नहीं जानते थे।

लेकिन मुझे लगता है कि उनका मतलब यह था कि हमें नहीं पता था कि यह इतना बुरा था। और आंशिक रूप से, मैं लोगों पर विश्वास करता हूं। लेकिन अगर आपकी नाक के नीचे साठ लाख लोग मारे जा रहे हैं तो यह कैसे संभव है कि आपको कुछ पता ही नहीं चला? मुझे लगता है कि उन दिनों लोगों को नहीं पता होने का कारण यह था कि वे जानना नहीं चाहते थे।

क्योंकि न जानना सुविधाजनक था। क्योंकि उन दिनों उस स्थिति में हस्तक्षेप करना वास्तव में खतरनाक था। और जिन कुछ लोगों ने ऐसा किया, उन्होंने अपनी जान जोखिम में डाल दी।

और उनमें से कई, उनमें से अधिकांश, जो आज भी बहुत प्रसिद्ध हैं, उन लोगों को बचाने के लिए अपनी जान गंवाने के लिए प्रसिद्ध हैं जिन्हें मौत की ओर घसीटा जा रहा था, वे लड़खड़ाते हुए वध की ओर बढ़ रहे थे। और इसलिए मुझे लगता है कि 3,000 साल पहले से, कहावतों का यह विशेष क्रम हमें सदियों से बता रहा है कि हम नरसंहार के संकट में तमाशबीन बने नहीं रह सकते। हमें पक्ष लेना चाहिए।

नीतिवचन 24, श्लोक 12 के अनुसार, परमेश्वर स्वयं इसकी मांग करता है। और यदि हम नहीं करते हैं, तो यहां एक ईश्वर है जिसे हमें उत्तर देना है। हालाँकि, उन प्रतिक्रियाओं को लेने के लिए साहस की आवश्यकता होती है, इसमें उच्च जोखिम शामिल होता है, यह खतरनाक है।

और जैसे ही हम ऐसा करते हैं, हम अच्छी तरह से नींद, आराम, कंपनी और शायद अपना स्वास्थ्य या अपना जीवन भी खो सकते हैं। जैसा कि हम इन मामलों पर इन कहावतों के आलोक में विचार करते हैं, जो मेरा मानना है कि बिल्कुल भी सामान्य नहीं हैं, मुझे लगता है कि हमें ईसाई शहादत के महत्व पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता है, जो एक बहुत ही अलग तरह की शहादत है जिसके बारे में कभी-कभी अन्य धर्मों में बात की जाती है, जहां लोग खुद को और दूसरों को उड़ा देते हैं और उसे शहादत कहते हैं। ईसाई शहादत अन्य लोगों को नष्ट करने, या अन्य लोगों को नष्ट करने के लिए स्वयं को नष्ट करने के बारे में नहीं है।

ईसाई शहादत उन लोगों से प्यार करके, जिन्हें इसकी सबसे अधिक आवश्यकता है, कमजोरों, सताए गए लोगों, जिन्हें मौत के घाट उतार दिया जा रहा है, जिन्हें यातना दी जा रही है, जिनका शोषण किया जा रहा है, आदि के लिए खड़े होकर ईश्वर के प्रेम का गवाह है। पर। और इसलिए मैं आज यहां विशेष रूप से यहूदी और ईसाई विश्वासियों से एक अपील करना चाहता हूं। और मैं इसे शायद थोड़े विचारोत्तेजक, उत्तेजक और लगभग अतिरंजित बयान में करूंगा, जिसे मैं एक मिनट में समझाऊंगा।

लेकिन मैं आपसे ये कहना चाहता हूं. यदि आप कभी खुद को ऐसी स्थिति में पाते हैं, जहां आप बदलाव ला सकते हैं और शहादत की संभावना भी सामने आती है, तो इसे स्वीकार करें। यह आपका एकमात्र मौका हो सकता है.

और इससे मेरा तात्पर्य यह है कि ईसाई शहादत मरने के लिए मरने के बारे में नहीं है। ईसाई शहादत एक बहुत ही सकारात्मक चीज़ के बारे में है, जो हर जगह सभी मनुष्यों के लिए ईश्वर के पुत्र, यीशु मसीह में ईश्वर के प्रेम की गवाही देने के बारे में है। और फिर उस प्रेम को निष्ठापूर्वक आज्ञाकारिता के साथ जीना, भले ही यह महंगा हो। धन्यवाद।

यह नीतिवचन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. नट हेम हैं। यह सत्र संख्या 12 है, समृद्धि संस्करण और नरसंहार पर कविता।